'भाषाओं को बचाने को प्राथमिक शिक्षा मातृभाषा में होना जरूरी'

नई दिल्ली, लोकसत्य

साहित्य अकादेमी द्वारा 'अंतरराष्ट्रीय आदिवासी भाषा वर्ष' के अवसर पर आयोजित दो दिवसीय'अखिल भारतीय आदिवासी लेखक उत्सव' का शनिवार को समापन हो गया। कार्यक्रम का पहला सत्र 'भारत की आदिवासी भाषाएं: संरक्षण एवं पुनरोद्धार' विषय पर केंद्रित था और बाकी तीन सत्रों में कहानी एवं कविता-पाठ के सत्र हुए।आज के पहले सत्र की अध्यक्षता के. वासमल्ली ने की एवं धर्मेंद्र पारे (कोरकू), जॅय सिंहतोकबी (कोर्बी), सृजन सुब्बा (लिंबू), अमल राभा (राभा) एवं सुबोध हांसदा (संताली) ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

सत्र की अध्यक्षा के.वासमल्ली ने तमिलनाडु की तोडा जनजाति और उसकी भाषा के बारे में बताते हुए कहा कि इस भाषा की वर्णमाला में 54 अक्षर हैं और यह भाषा ध्वन्यात्मक है। इसके बोलने वाले मात्र 1500 लोग बचे हैं। इनके गीत मुख्यता मौसम के वर्णन पर आधारित होते हैं। उन्होंने कहा कि इनका साहित्य आज भी केवल वाचिक रूप में ही उपलब्ध है।

धर्मेंद्र पारे ने कोरकू भाषा के बारे में बताते हुए कहा कि इसको बोलने वाले मध्यप्रदेश और महाराष्ट्र में हैं और यह मुंडा समुदाय की भाषा के रूप में पहचानी जाती है। कोरकू का मतलब 'मनुष्य' है। उन्होंने कोरकू भाषा के कई शब्दों की समानता की 'हो' आदि भाषाओं से तुलना करते हुए कहा कि उनके कई शब्द एक समान हैं। कार्यक्रम का समापन वक्तव्य अकादेमी के उपाध्यक्ष माधव कौशिक ने दिया।

अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने सभी के प्रति धन्यवाद ज्ञापन किया। कार्यक्रम के विभिन्न सत्रों का संचालन साहित्य अकादेमी के संपादक (हिंदी) अनुपम तिवारी ने किया।

Delhi 11-08-2019

http://epaper.loksatya.com/

राष्ट्रीय हिंदी दैनिक लोकसत्य